रिपोर्ताज
अेक दिन आपरौ

विनोद सोमानी 'हंस'

लेखक–परिचै

विनोद सोमानी 'हंस' रौ जनम भीलवाड़ा जिलै रै महेन्द्रगढ़ कस्बा में 4 नवमबर, 1938 में होयौ। आपरी सरुआती भणाई–लिखाई महेन्द्रगढ़ में अर पछै नौकरी करता थकां अजमेर में होयी। श्री सोमानी रौ जीवण भणाई–लिखाई री हटौटी, साहित्य सिरजण रै उमाव अर करड़ी मैणत सूं ऊजळ्योड़ौ जीवण है। हिन्दी मांय केई पोथ्यां छपी, पण राजस्थानी में उणां री पोथ्या है– 'खामोसी' अर 'तिस' (कहाणी–संग्रै)। श्रीकान्त वर्मा रै 'मगध' नांव रै कविता–संग्रै रौ आप राजस्थानी मांय उल्थौ करियौ जकौ केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, दिल्ली सूं छपियौ अर इणी माथै साहित्य अकादेमी रौ अनुवाद पुरस्कार मिळ्यौ। आपरी केई रचनावां पुरस्कृत होय चुकी है।

पाठ–परिचै

संकलित रचना अेक रिपोर्ताज है। राजस्थानी में हिन्दी री भांत रिपोर्ताज लिखण री सरुआत नूंवी ई है। 'अेक दिन आपरौ' नांव रै इण रिपोर्ताज में 'आप' नांव सूं बतळाईज्योड़ै नौकरी–पेशा आदमी री छुट्टी रै दिन बजार में अफसर सूं बातचीत, दफ्तर रै साथी–साईनां सूं ठट्ठा–मसखरी, करड़ी–कंवळी बातां वाळी हथाई री अेक दिन री रपट है। आथमतै दिन अेक मेहमान मिळ जावै अर उणां नै लेय'र घरां जावै अर उणां रौ पूरौ दिन यूं ही बीत जावै। गिनायत आवण सूं मस्ती में खलल पड़ै अर पूरौ मूड बिगड़ जावै। 'आप' भायलै सूं नमस्ते कर घरां कांनी मुड़ग्या।

अेक दिन आपरौ

आज दीतवार है अर आप आपरा फालतू बगत रै उपयोग सारू घरां सूं बारै निसर गया हौ। जिण तरै खरीद करणियौ आपरै खूंझ्या में गिणती रा रुपिया घालनै चालै बियां ई आप भी नमस्ते करणै रौ बंडळ उठायनै चाल्या हौ। पण कदै–कदै तौ नमस्ते रौ बंडळ खुलै ई कोनी अर कदै–कदै आप नै अतरी नमस्ते ठोकणी पड़ै कै उधार लेय नै काम चलावणौ पड़ै।

आप सड़क पर आयग्या हौ अर आगै बध रैया हौ। सागै ई स्कूटर पर आपरौ बोस आय रैयौ है। आपरी निजरां मिळगी है। आप फटाक सूं सैनिक री दांई 'गुड मार्निंग सर' कैय दियौ है। वौ आपरी नाड़ नै थोड़ी–सीक हिलाय दी है। वौ आपरै कनै स्कूटर नै लाय थाम्यौ है अर बोल्यौ है– "छुट्टी मनाय रैया हौ?" आपरै हिरदा में उपज्यौ कै 'आप भी तो मनाय रैया हौ' आप आप सरमाय नै मुळकता

मूड में कैय देवौ हौ– "आपरी किरपा है, सर।"

बोस अर आप सड़क रै किनारै खिसक आया हौ। फेरूं वौ बोल्यौ– "वै केस कालै निपटग्या हा के? म्हैं तौ पूछणौ ई भूलग्यौ हौ।"

"हां सर, वै तौ लंच रै पैलां ईज निपटाय दिया हा। आपरौ काम तौ सै सूं पैलां निपटाऊं हूं।" आप अेक हुंसियार क्लर्क री दांई उथळौ देय दियौ। आपरा ईं उथळा सूं वौ घणौ राजी व्हियौ अर हेताळू भाव सूं बोल्यौ है– "भाई, बाकी रौ स्टाफ तौ चोखौ है, पण वौ मिश्रो घणो परेसान करै है। साळौ, कदै काम तौ करै नीं अर नेतागिरी करै है।"

आप पाणी रा ढाळ नै जाणौ हौ। मस्कौ लगावतां बोल्या हौ– "हां सर, आप सही फरमावौ हौ।"

बियां आप मन में तो राजी हौ कै मिश्रो इण री नाक में दम कर राख्यौ है, पण आप बोस नैं राजी राखणौ चावौ हौ अर मौकौ देखनै हां में हां मिळाय रैया हौ। आप कैयौ है– "कांई करां सर! म्हैं तौ उणनैं घणौ ई समझाया करां, पण वौ है ईज अड़ियल किस्म रौ मिनख। कैवै है कै दबेलदारी सूं काम नीं करूंला।"

बोस री चेतना जागगी है– "अच्छा, म्हनै ईज कीं–न–कीं करणौ पड़सी। साळै री तबीयत ठीक कर देवूंला। हाथ जोड़तौ फिरसी। म्हनै समझै कांई है! आखिर म्हैं भी फर्स्ट क्लास अफसर हूं, नाकां चणा चबवाय देवूंला।"

आप स्वीकृति सूचक मुळक दिया हौ, बियां मन में खीझ रैया हौ। बातां ई बातां में आपनै घणी बेळ्या हुयगी है। आप जरूरी काम रौ बायनौ करनै बोस सूं पिंड छुडायौ है अर आगै बधग्या हौ।

थोड़ी ई छेटी पर आपरौ अेक लंगोटियौ मिळग्यौ है। जो आपनै बोस रै साथै बातां करतां देख लियौ है– "कहो प्यारे, घणौ मस्कौ लगायौ आज तौ?"

आप रंग्या हाथां पकड़ीजग्या हौ, पण हुंसियारी सूं बोल्या हौ– "अरे यार, इयां ई फालतू टैम खराब कर दियौ। अबै रस्ता में मिळग्यौ तौ बात तौ करणी ई पड़ै। इस्या अफसरां री कांई परवा करूं।"

भायलौ भी घुटी थकी रकम है– "तौ कांई हुयौ यार, आ नौकरी ई यांन री ईज है। सलाम नीं ठोकौ तौ अै बेराजी हुय जावै; कांई न कांई रीत सूं कसर निकाळै। इण वास्तै म्हारै गुरुजी भी कैयौ है कै अफसर कैवै कै दिन तौ दिन, वौ कैवै रात तौ रात।"

"मिळा प्यारा हाथ।" आप तुक मिलावता थका उछळ पड़िया हौ। दोनूं ई जोरां सूं ठहाकौ लगाय दियौ। फेरूं बात रौ रुख पलटता थकां आप कैयौ है– "यार, रात नै बेबी री तबीयत घणी बिगड़गी ही।"

"पण, म्हासूं मिळौ तौ यांन री फालतू बातां मत कर्‌या कर।" भायलौ बोल्यौ है। वौ कैयौ है– "चार दिन री जिनगाणी में अै दुख री बातां रैवण दे, कोई हंसी–खुसी री बात कर।"

आप दोनूं आगै बधग्या हौ। कोई धेय कोनी है। अचाणचूक अेक कवि–मित्र मिळग्यौ है– "नमस्कारम्।"

आप दोनूं हाथ जोड़नै कैयौ है– "कैवौ कविराजा, घणा दिनां सूं मिळ्या हौ। कविता कियां चालरी है?"

कवि थोड़ौ गंभीर हुयग्यौ है। वौ दारसनिक अंदाज सूं बोल्यौ– "साहित्य रा पारखी है कठै! कविता नैं कुण समझै? बांरी संवेदना नै कोई परस नीं पावै। लोगां नै चावै कोरौ मनोरंजन। बस, स्वांतः सुखाय लिखता रैवौ।"

आप वांनै उछाव सूं कैय रैया हौ– "कविराज, आ साधन री बात है। जनता जागैली अर अेक दिन थांरी कवितावां पिछाणी

जावैली। हां, आं दिनां कोई कवि–सम्मेलन नीं हुवै है....।''

''होय रियौ है। निराला जयंती आवण वाळी है। बारै सूं भी लोग आय रिया है।''

''खूब! म्हां सुणणै रै वास्तै जरूर आवांला।'' आप अै आखरी बोल बोलनै आगै बधग्या हौ।

अबै आप चौराया पर आयग्या हौ। आपरौ दोस्त आपरै साथै घिसट रियौ है। अठै चौराया पर केई भांत–भंतीला मोटा–मोटा पोस्टर लाग्योड़ा है। आपरौ भायलौ अेक पोस्टर देख रियौ है जिणमें सिनेमा री फोटूवां लाग्योड़ी है। आप मूंडै सूं सीटी बजाय दी है। बठीनै वां तीजा भायला रौ ध्यान पोस्टर सूं हट'र आपरै कानी व्हैग्यौ है। वौ आपनै देखनै उछळग्यौ है। आप दोनूं लिपटग्या हौ अर अेक–दूजै रौ बोझौ उठाय रिया हौ।

आप उणरौ परिचै आपरै साथी सूं करायौ। पछै आप पूछ्यौ– ''आज रौ कांई प्रोग्राम है?''

''पिक्चर रौ।''

''किसी?''

''आसीरवाद। इण में अशोक कुमार री जोरदार अेक्टिंग है।''

''हूंऽऽ, अशोक कुमार नै राष्ट्रपति रौ इनाम भी तौ मिळ चुक्यौ है।'' साथीड़ौ बोल्यौ।

''मिळणौ ईज हौ। बौत जोरां रौ काम है इण में।'' दूजोड़ौ भायलौ कैयौ।

''अेकला ईज जावौ हौ?'' आप वांनै पूछ रैया हौ।

''थे लोग भी चालो यार। आपां रौ साथै रैवैला। पण पईसां रौ सिस्टम अमेरिकन रैवैला।''

आप सगळा ई हंस पड़्या हौ– ''थूं रैसी कंजूस रौ कंजूस।

आप मना करनै आगै बधग्या हौ। आपरा केई जाण्यां–पिछाण्यां मिळ रिया है। आप किणी सूं हंस नै, किणी सूं 'हैलो', किणी सूं हाथ हिलायनै, कुछेक सूं आंख मारनै, अेक सूं मुक्को ताणनै अर हेताळू सूं चुंबन री अेक्टिंग मारता अभिवादन कर रिया हौ। आप नमस्ते में माहिर हुयग्या हौ। जतरा लोग बतरी ई तरै सूं नमस्कार। जिण तरै लोग सैकड़ूं तरै री हंसी में माहिर हुवै है, उणीज तरै आप नमस्ते में अथोरिटी हुयग्या हौ। अचाणचूक आपरौ माथौ ठणकगयौ है। आपरा अेक रिस्तेदार थैली लटकायां चल्या आय रिया है। आप साम्हीं पड़ग्या हौ अर दोनूं हाथ जोड़नै बोल्या हौ– ''पधारौ, कठीनै आज रस्तौ भूलग्या हौ आप।''

''कालै कोरट में पेसी है, सो चल्यौ आयौ। थे अठै हौ ईज, इण वास्तै आज ई आयग्यौ। थोड़ौ सामान खरीदणौ हौ।'' रिस्तेदार आपरी बात साफ करी।

आप आपरा भायला नै खारी दीठ सूं देख्यौ है अर उण सूं टाटा करनै रिस्तैदार रै साथै घरां री आडी मुड़ग्या हौ। भायलौ अेकलौ ईज चाल पड़ियौ, पण वौ भी आखरी अभिवादन कर लियौ है– नमस्ते।

आपरौ मूड बिगड़ग्यौ है, क्यूंकै आपरी मस्ती में खलल पड़गी है। मेहमान सूं रामजी बचावै। पण, आयां री खातरी तौ करणी ईज पड़सी। आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ– बाप कांई कर भी नीं पाया हौ, सोच भी नीं पाया हौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दीतवार=रविवार। बगत=समै, बखत। हिरदा=हियौ, दिल। उथळौ=जवाब। ढाळ=ढळाण। बेळ्या=समै। बायनौ=बहानौ, ओळाव। लंगोटियौ=बालगोठियौ, बालसखा। बेराजी=रीसाणौ, नाराज। फालतू=बेकार, बाधू। अचाणचूक=अचाणचक, अेकाअेक। परचै=परिचय, ओळखाण। धेय=उद्देस्य। आखरी=छेहलौ, अंतिम। जतरा=जितरौ। माहिर=पारंगत। स्याफ=साफ। भायला=वाहेला, मित्र। खलल=बाधा, अटकाव, विघन। उल्थौ=अनुवाद।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'अेक दिन आपरौ' रचना किसी विधा री रचना है–
   (अ) संस्मरण (ब) रिपोर्ताज
   (स) व्यंग्य (द) कहाणी
   ( )

2. आपरै 'गुड मार्निंग सर' रै पडूत्तर में अफसर रै थोड़ी–सीक नाक हिलावण सूं कांई परगट हुवै–
   (अ) नाड़ में दरद है। (ब) नाड़ मुड़ै कोनी
   (स) अफसर में 'मैं' है (द) मातहत सूं नफरत है
   ( )

3. आप स्वीकृति मूलक मुळक रिया हौ बियां मन में खीझ रैया हौ। आपरै मन में खीझ क्यूं हुयी?
   (अ) अफसर रै 'मैं' आळै बोल सूं
   (ब) बातां में घणी बेळ्या होवण सूं
   (स) अफसर सूं भेंट अणचाही होवण सूं
   (द) अफसर सागै बात करतां नै भायलां रै देखण सूं
   ( )

4. म्हारै गुरुजी कैयौ– "अफसर कैवै कै दिन तौ दिन, वौ कैवै रात तौ रात।" वौ क्लर्क आपरा भायला नै गुरुजी रौ औ बोल क्यूं बतायौ?
   (अ) अफसर री खुसामद आळै व्यौवार नै ठीक ठैरावण खातर
   (ब) गुरुजी रै बोल रौ महत्त्व दिखावण खातर
   (स) भायला नै आपरी हुंसियारी दिखावण खातर
   (द) भायलां नै ठकुरसुहाती दीठ रौ नफौ बतावण खातर
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक सोमानी जी किण रचना रौ राजस्थानी उल्थौ कर्‌यौ?
2. रिपोर्ताज में 'आप' सबद रौ प्रयोग किण सारू हुयौ है?
3. कवि मित्र सूं लोगां री कांई सिकायत है?
4. 'नाक में दम करणौ' मुहावरै रौ कांई अरथ है।

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. ''चार दिन री जिनगाणी में अै दुख री बातां रैवण दे।'' आपरी किण बात माथै उणरौ भायलौ उणनै आ बात कैयी?
2. ''आप नमस्ते में माहिर हुयग्या हौ।'' इण बोल री सच्चाई दाखला देयनै परगट करौ।
3. ''आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ।'' लेखक आ बात क्यूं कही?
4. आपरा अेक रिस्तेदार नै देख 'आपरौ' माथौ क्यूं ठणक गियौ?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. ''साहित्य रा पारखी है कठै?'' आ बात कुण किणनै, कद अर क्यूं कही? खुलासौ करौ।
2. इण रिपोर्ताज नै संस्मरण कैवण में कांई अबखाई है? खुलासौ करौ।
3. 'अेक दिन आपरौ' रचना रै धेय रौ खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आपरौ भायलौ अेक पोस्टर देख रियौ है जिणमें सिनेमा री फोटूवां लाग्योड़ी है। आप मूंडै सूं सीटी बजाय दी है। बठीनै वां तीजा भायला रौ ध्यान पोस्टर सूं हट'र आपरै कानी व्हैग्यौ है। वौ आपनै देखनै उछळग्यौ है। आप दोनूं लिपटग्या हौ अर अेक–दूजै रौ बोझौ उठाय रिया हौ।

(ब) आपरौ मूड बिगड़ग्यौ है, क्यूंकै आपरी मस्ती में खलल पड़गी है। मेहमान सूं रामजी बचावै। पण, आयां री खातरी तौ करणी ईज पड़सी। आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ– बाप कांई कर भी नीं पाया हौ, सोच भी नीं पाया हौ।